P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-1, August-2018

E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

अनुसूचित जाति एवं उच्च शिक्षा : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

सारांश

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि तथा शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिला है। शोधकर्ता ने उद्देश्यपूर्ण एवं स्नोबॉल निदर्शन प्रणाली का प्रयोग करते हुए राजकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत 300 छात्र–छात्राओं का चयन किया है। शोधकर्ता ने साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया। उत्तरदाताओं के परिवार की आर्थिक स्थिति उत्तरदाताओं के शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं को प्रभावित कर रही है। जिन उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति अच्छी है उनकी शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षा भी उच्च है। जिन उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति निम्न है उनकी आकांक्षा भी निम्न है।

अरविन्द कुमार गहलौत
सीनियर रिसर्च फेलो,
समाजशास्त्र विभाग,
एस0आर0टी0, कैम्पस,
हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय,
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड,
भारत

मुख्य शब्द : अनुसूचित जाति, उच्च शिक्षा, शैक्षिक आकांक्षा, व्यावसायिक आकांक्षा।

प्रस्तावना

भारतीय सामाजिक संरचना के अन्तर्गत जाति व्यवस्था एक महत्वपूर्ण घटक है जाति व्यवस्था जहाँ एक ओर भारतीय समाज का खण्डात्मक व संस्तरणात्मक विभाजन करती है वहीं विभिन्न जातियों को पदों, भूमिकाओं का भी बोध कराती है इस पारम्परिक विभाजन की छाप अब भी ग्रामीण समाज में देखी जा सकती है विशेष रूप से दलित जातियां जो कि संविधान में अनुसूचित जातियों के अन्तर्गत रखी गयी है उन्हें समाज की मुख्य धारा में जोड़ने के लिए अनेक संवैधानिक अधिकार प्रदान किये गये हैं। फिर भी इनकी दशा में वांछित सुधार नहीं हुआ है अब भी वे प्रदत्त भूमिकाओं में बंधी दिखाई देती है और समाज में उनके प्रति मनोवृत्ति भी उसी प्रकार बनी हुयी है। समाज में उनके प्रति अपवित्रता का भाव अब भी भारतीय समाज में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

शिक्षा सामाजिक सशक्तिकरण के लिए पहला और मूलभूत साधन है। इसमें केवल प्राथमिक या मैट्रिक स्तर की शिक्षा ही शामिल नहीं है बल्कि उच्च स्तर की शिक्षा भी शामिल हैं हम एक ऐसे नए विश्व में रह रहे हैं जहां उन्नत प्रौद्योगिकी और ज्ञान आधारित शक्ति का बोलबाला है। आधुनिक और अत्यंत स्पर्धाशील विश्व की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए केवल शिक्षा का होना जरूरी नहीं बल्कि एक अच्छे स्तर की उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता है। भारत विश्व के अग्रणी देशों में शामिल होने के लिए प्रयासरत रहा है। यह समग्र सामाजिक–आर्थिक विकास के बिना संभव नहीं है समाज के सभी वर्गो के लिए और विशेष रूप अनुसूचित जाति के उत्थान के लिए शिक्षा को सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण साधन माना गया है। समाज के निम्न वर्गों के सामान्य वर्गों के बराबर लाने के लिए नियोजित तरीके से प्रयास किए गए हैं। इसके अन्तर्गत उच्च शिक्षा के लिए समाज के अत्यंत कमजोर वर्गों या अनुसूचित जाति के वर्गों के छात्रों को अवसर प्रदान किये जाते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था तथा नियोजित आर्थिक विकास का प्रारूप अपनाया गया। इसके साथ ही स्वतंत्र भारत में अनुसूचित जातियों के उत्थान हेतु अनेक संवैधानिक प्रावधान बनाए गए। संवैधानिक प्रावधानों के अतिरिक्त भारत सरकार ने कुछ अधिनियम भी पारित किए जिसके माध्यम से अनुसूचित जातियों की निर्योग्यताओं को दूर किया जा सके ताकि ये लोग भी समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकें।

आज भी दलितों की दशा आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक आदि परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त दयनीय है। दलित दयनीयता ने अनेकानेक कारणों में

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-1, August-2018
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

सबसे मौलिक कारण सत्ता एवं शिक्षा से इन वर्गों का बिलगाव है। शिक्षा विकास का मेरुदन्ड है। शिक्षा के विकास के बिना कोई भी योजना सफल नहीं हो सकती है। आज भी दलित शैक्षणिक रूप से काफी पिछड़े हैं। जब तक दलित वर्ग शैक्षिक रूप से उन्नति नहीं कर सकेंगे, तब तक उनका सर्वतोन्मुखी विकास संभव नहीं है। डॉ0 भीमराव अंबेडकर भी अछूतों की मुक्ति का सर्वप्रमुख साधन शिक्षा को मानते थे। संविधान सभा में अनुसूचित जातियों के लिए विशेष संरक्षण सम्बन्धित प्रस्ताव में उन्होंने इन जातियों की उच्च शिक्षा का खर्च सरकार द्वारा उठाए जाने की मांग की थी। संविधान में यह प्रावधान तो शामिल नहीं हुआ लेकिन इसमें शिक्षा को पिछड़ेपन का प्रमुख आधार माना गया।

स्वतन्त्रता के 71 वर्षो के दौरान शिक्षा में आश्चर्यजनक प्रगति हुई, प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक तथा तकनीकी शिक्षा से लेकर व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए और शिक्षा का क्षेत्र व्यापक होने के साथ–साथ बहुआयामी भी हो गया। फिर भी अनुसूचित जातियो की शिक्षा वर्तमान समय में भी निम्न स्तर की बनी हुई है। जो कि इस बात से स्पष्ट है कि प्राथमिक, माध्यमिक तथा हाईस्कूल तक दलितों का नामाकंन लगभग 15 प्रतिशत है तथा उच्च माध्यमिक,स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर लगभग 8 प्रतिशत है। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी स्थिति निम्न बनी हुई है। हाईस्कूल स्तर पर दलितों का पास औसत 53 प्रतिशत है जबकि सामान्य पास औसत 65 प्रतिशत है, स्नातक स्तर पर पास स्तर 35 प्रतिशत है जबकि सामान्य पास औसत 57 प्रतिशत है और स्नातकोत्तर स्तर पर 60 प्रतिशत है जबकि सामान्य पास औसत 76 प्रतिशत है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनुसूचित जातियों का नामांकन दर अन्य वर्गों की अपेक्षा बहुत ही कम है। सामाजिक–आर्थिक गतिशीलता के लिए उच्च शिक्षा अत्यंत उपयोगी है। समाज के कमजोर वर्गों का उत्थान इसके बगैर संभव नहीं है। इन वर्गों को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराना एक चुनौती है। यह तभी संभव है जब शिक्षा पर समग्र दृष्टि से विचार हो। अतः सामाजिक रूप से वंचित समूह की सामाजिक–आर्थिक प्रगति तभी हो सकेगी जब इन्हें प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने की सुनिश्चित एवं कारगर योजना बने। इसके साथ ही उन सामाजिक आर्थिक बाधाओं को पहचान कर दूर करना होगा। जिसके कारण यह लोग शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। पूरी शिक्षा और विशेषकर उच्च शिक्षा के लक्ष्य को लेकर स्थिति पूरी तरह स्पष्ट होनी चाहिए।

अवधारणात्मक स्पष्टीकरण (Conceptual Clarification)

अनुसूचित जाति

सबसे पहली बार अनुसूचित जाति पद का प्रयोग साइमन कमीशन ने 1927 ई0 में किया था। अंग्रेजी शासन काल में अनुसूचित जातियों के लिए सामान्यतया दलित वर्ग पद का प्रयोग किया जाता था। कहीं–कहीं इन जातियों के लिए ब्राह्य जातियाँ या अस्पृश्य जातियों का प्रयोग भी हुआ है। गाँधी जी ने इन जातियों को हरिजन–ईश्वर की संतान कहा है। ये सब प्रयोग भावना प्रधान है। 1935 के संविधान ने तो इन्हें अनुसूचित जातियों का नाम ही दिया है किसी भी प्रदेश या केन्द्र शासित प्रदेश में राज्यपाल की सलाह से राष्ट्रापति किन्ही जातियों, प्रजातियों या जनजातियों या उनके भाग या जातियों, प्रजातियों या जनजातियों के उप–समूहों को विशिष्ट घोषित कर सकता है और ये उस प्रदेश या केन्द्र शासित प्रदेश के सम्बन्ध में संविधान के सन्दर्भ में अनुसूचित जातियाँ मानी जायेगी।

संविधान द्वारा दिया गया यह प्रावधान अनुच्छेद 34 में दिया गया है। इस प्रावधान के अन्तर्गत भारत के राष्ट्रपति ने समय–समय पर आदेश निकालकर देश में अनुसूचित जातियों के नामों को विशिष्टीकृत किया है।

उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा (Higher Education) उच्च शिक्षा का अर्थ है सामान्य रूप से सबको दी जाने वाली शिक्षा से ऊपर किसी विशेष विषय या विषयों में विशेष, विशद तथा सूक्ष्म शिक्षा। उच्च शिक्षा के उस स्तर का नाम है जो विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी महाविद्यालयों, लिबरल आर्ट कालेजों एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक के बाद यह शिक्षा का तृतीय स्तर है जो प्रायः ऐच्छिक (Non-compulsory) होता है। इसके अन्तर्गत स्नातक, परास्नातक (Postgraduate Education) एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि आते हैं।

शिक्षा–शब्दकोष में उच्च शिक्षा को परिभाषित करते हुये लिखा है, "उच्च शिक्षा में माध्यमिक विद्यालयों के स्तर से ऊपर महाविद्यालयों, व्यवसायिक विद्यालयों, तकनीकी संस्थानों और शिक्षक–महाविद्यालयों में दी जाने वाली समस्त शिक्षा सम्मिलित है"। शिक्षा शब्दकोश – p. 282

साहित्यावलोकन

सिन्हा (1977) पटना विश्वविद्यालय के 200 छात्रों के 'हरिजनों के प्रति दृष्टिकोण' पर 69 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हरिजनों को पिछड़ा हुआ, 56 प्रतिशत ने चालाक व मक्कार, 55 प्रतिशत ने असंस्कृत, 54 प्रतिशत ने मूर्ख, 52 प्रतिशत ने गन्दा, 52 प्रतिशत ने शराबी, 49 प्रतिशत ने कुरुप बताया। यह केवल इंगित करता है कि 35 वर्ष पूर्व अनुसूचित जातियों की क्या छवि समाज में प्रचलित थी। यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं अन्वेषणात्मक शोध प्ररचना पर आधारित है।

विक्टर डिसूजा (1980) ने भी पंजाब में दलितों व अन्य के बीच शिक्षा में भेदभाव के स्वरूप और जाति प्रथा, जाति व्यवहार, आर्थिक कारक तथा कल्याण कार्यक्रमों का स्वरूप और कार्यविधि किस प्रकार इन स्वरूपों को प्रभावित करतें हैं का पता लगाया। यह अध्ययन केस स्टडी पर आधारित है। इस अध्ययन में संरचनात्मक– प्रकार्यात्मक उपागम का प्रयोग हुआ है। यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं अन्वेष्णात्मक शोध प्ररचना पर आधारित है।

प्रकाश एन0 पीम्पले (1980) यह अध्ययन केस स्ट्डी पर आधारित है। इसमें पंजाब राज्य के अनुसूचित जाति के छात्रों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के उद्देश्य–जो अनुसूचित जाति के छात्र संस्थाओं में पढ़ रहे हैं उनकी स्थिति का अध्ययन अनुसूचित जाति के छात्रों

के द्वारा झेली गयी समस्याओं और उनके साथ भेदभाव का अनुभव है इसकी जाँच करना। इसमें तथ्य संकलन जनसंख्यात्मक विशेषताओं के आधार पर किया गया है। जिसमें लिंग, आयु, वैवाहिक स्थिति, जाति और धर्म आदि। आगे का डाटा छात्रों के परिवार के आर्थिक एवं शैक्षिक विशेषताओं के आधार पर इकठ्ठा किया गया। डाटा का कलेक्शन इनके शैक्षिक प्रगति, समझने का स्तर, अध्ययन के जारी रखने की आदत और शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षाओं के आधार पर प्राप्त किया गया। इसमें प्रश्नावली विधि का उपयोग किया गया है।

चक्रवर्ती (1999) ने अपने अध्ययन में पाया कि सरकार एस0 सी0,एस0टी0 के समुदाय के लोंगों का सामाजिक,आर्थिक स्थिति में सुधार करना चाहते हैं, लेकिन देखा गया है कि इनके कल्याण की जो भी योजनाएं हैं इसका लाभ इन्हें नही मिल पा रहा है। यह अध्ययन केस स्ट्डी पर आधारित है।

नारायण मिश्रा (2001) अपने अध्ययन में पाया कि अनुसूचित जाति के लोग अन्य जातियों के लोगो से बहुत पीछे हैं, मिश्रा ने सुझाव दिया कि अनुसूचित जाति के लोगों को समाज के मुख्य धारा में लाने के लिए अभी बहुत प्रयास की जरूरत है।

आर0 सुरेशा एवं बी.सी. मयलाराप्पा (2012) प्रस्तुत अध्ययन अनुसूचित जाति के महिला विद्यार्थियों के उच्च शिक्षा से सम्बन्धित है जो मुख्य रुप से इसमें अनुसूचित जाति महिला विद्यार्थियों के सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालता है। यह काफी मुश्किल है कि सामाजिक शैक्षिक स्तर जिसमें अछूतता को भी प्रदर्शित किया जाए। भारत के इतिहास से आजादी के बाद भी इनको विशेष जगह दिलाना मुश्किल है। उच्च शिक्षा में अनुसूचित जाति के महिला विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठ भूमि का विश्लेषण किया जाए। अध्ययन का क्षेत्र टुमकुर कस्बा है। सरल रेन्डम विधि का प्रयोग करते हुए निदर्शन का आकार 250 विद्यार्थियों का चयन किया गया। निदर्शन का आकार एक निश्चित समय के साथ और अन्य सोत्रों की उपलब्धता पर आधारित था। मुख्य रुप से प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। विद्यार्थियों से प्राप्त प्राथमिक तथ्यों को द्वितीयक तथ्यों से सम्बन्धित किया गया। इनमें से 98.8% युवा विद्यार्थी अथवा मध्य आयुवर्ग के थे सिर्फ 1.2% विद्यार्थी अधिक उम्र के थे। 250 विद्यार्थियों में से 97.2% अविवाहित और बहुत कम मात्रा में 2.8% विवाहित थी। 250 उत्तरदाताओं में से 234 (93.6%) एकांकी परिवार से सम्बन्धित है जबकि 6.4% विस्तृत परिवार से सम्बन्धित है। अधिकतर विद्यार्थी 60.4% कन्नड़ भाषा में ही अपने वर्तमान कोर्स का अध्ययन कर रही हैं जबकि एक तिहाई 39.6% का अंग्रेजी माध्यम है। यह अध्ययन अन्वेषणात्मक शोध प्ररचना पर आधारित है।

लक्ष्मी वर्मा, पद्मा अग्रवाल एवं सुमन लता सक्सेना (2016) ने "उच्च एवं निम्न व्यावसायिक आकांक्षा का किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन" किया है।

शिक्षा और व्यवसाय में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। यह दोनों एक नदी के दो पाट के समान है। यदि हम दोनों के उद्देश्यों और प्रयोजनों पर गौर करें तो यह बात समझी जा सकती है कि शिक्षा के कई उद्देश्य है, उनमें से प्रमुख उद्देश्य है व्यक्ति में निहित सामर्थ्य की सीमा में उसका सर्वांगीण विकास करना। शिक्षा सतत् संचरणीय प्रक्रिया है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के सामने आने वाली व्यावसायिक समस्याओं का निदान भी संभव है। शिक्षा के प्रकाश में व्यक्ति अपनी योग्यता, क्षमता, बौद्धिकता एवं विश्व में व्याप्त गुण तथा दोष को सहजता से समझ जाता है। शिक्षा किसी भी व्यवसाय के उन्नयन का अपरिहार्य सोपान है। अर्जन की व्याख्या को हृदयस्थ करते हुए धनार्जन की मात्रा एवं प्रकार को कितना महत्व देने की सीमा निर्धारित करते हुए अपने अनुकूल व्यवसाय को चुनना अथवा व्यवसाय के अनुकूल अपने को ढालना ही व्यवसायिक सफलता एवं संतोष का मूलाधार है।

व्यावसायिक आकांक्षा

किसी भी व्यक्ति की व्यवसाय के प्रति जो आकांक्षा होती है उसे उसकी व्यवसायिक आकांक्षा कहा जाता है। छात्र की व्यावसायिक आकांक्षा तीन प्रकार की हो सकती है। पहले वे छात्र जिनकी आकांक्षा काफी उच्च है, दूसरे प्रकार के छात्र वे है, जिनकी व्यावसायिक आकांक्षा अपने स्तर के अनुकूल होती है। अतः उन्हें आत्मविश्वास की प्राप्ति होती है। तीसरे वे छात्र जो निम्न स्तर की आकांक्षा रखते है, उनकी आकांक्षाओं पर उनके परिवार के निम्न स्तर का प्रभाव पड़ता है और काबिल होने पर भी वह पिछड़ जाते है। जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए प्रत्यके व्यक्ति को कोई न कोई कार्य अवश्य करना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार कार्य की प्राप्ति नहीं होती। प्रत्येक व्यक्ति की आकांक्षा भिन्न–भिन्न होने के कारण कार्यो में भी भिन्नता होती है। बौद्धिक एवं मानसिक स्तर में भिन्नता भी स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ती है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है कि हम समाज में सभी व्यक्तियों को विभिन्न व्यवसायों में संलग्न पाते है। व्यक्ति का जीवन निर्माण आकांक्षा स्तर द्वारा प्रभावित होता है। एक व्यक्ति क्या बनना चाहता है? वह इस दिशा में कितना प्रयास या सफलता प्राप्त करना चाहता है। यह उस व्यक्ति के आकांक्षा स्तर पर निर्भर करता है। यही आकांक्षा स्तर व्यक्ति के लक्ष्य को निर्धारित करता है।

उद्देश्य

उच्च व्यावसायिक आकांक्षा वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न व्यावसायिक आकांक्षा वाले छात्रों से अधिक होगी, का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

उच्च व्यावसायिक आकांक्षा वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न व्यावसायिक आकांक्षा वाले छात्रों से अधिक होगी।

विधि–न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में 1300 किशोरों का चुनाव न्यादर्श हेतु किया गया था जिसमें से 957 किशोरों के प्रपत्र परिकल्पना के अनूकूल पाये गये। जिन्हें उच्च व्यवसायिक आकांक्षा और निम्न व्यवसायिक आकांक्षा में विभाजित किया गया है मध्यम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को न्यादर्श में सम्मिलित नहीं किया गया है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-1, August-2018

E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

उपकरण

विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा को मापने हेतु डॉ. ग्रेवाल द्वारा निर्मित प्रमापित उपकरण व्यवसायिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया है तथा शैक्षिक उपलब्धि को मापने हेतु किशोरों के कक्षा 10 के कुल प्राप्तांको को लिया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत शोध कार्य में आंकड़ों के विश्लेषण के लिए F परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

परिणाम

आकांक्षा स्तर का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पाया गया। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि एक कारक के रुप में आकांक्षा स्तर शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है, परिकल्पना में यह परिकल्पित किया गया था कि वे छात्र जिनका व्यावसायिक आकांक्षा स्तर अधिक होगा उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न व्यावसायिक आकांक्षा स्तर वाले छात्रों की तुलना में अधिक होगी। सांख्यिकीय विश्लेषण का अवलाके न करने पर स्पष्ट होता है कि सम्बन्धित एफ–मान सार्थकता के .01 स्तर पर (F=18.497, P=.000) सार्थक है। इस तथ्य के आधार पर परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

विवेचना

उच्च व्यावसायिक आकांक्षा वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न व्यावसायिक आकांक्षा वाले छात्रों से अधिक होगी, इस परिकल्पना में सार्थक अंतर पाया गया है। इसका कारण यह है कि व्यक्ति की उपलब्धि और व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध होता है जिन छात्रों की व्यवसायिक आकांक्षा उच्च होती है वे अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते है जिसके कारण वे आरंभ से ही अपने शिक्षा के प्रति गंभीर होते है यही कारण है कि ऐसी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी जाती है।

अध्ययन का उद्देश्य

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि तथा शैक्षिक आकांक्षा एवं व्यवसायिक आकांक्षा के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी है।

शोध प्रचना

यह अध्ययन **वर्णानात्मक एवं अन्वेषणात्मक शोध** प्रचना पर आधारित है।

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तावित शोध समस्या का अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले को चयन किया गया है। जनपद गाजीपुर शैक्षिक रूप से अति पिछड़ा हुआ हैं। आज भी इस जिले में कोई विश्वविद्यालय नहीं है।

समग्र

प्रस्तुत शोध समस्या में उत्तर प्रदेश राज्य के गाजीपुर जिले के समस्त उच्च शिक्षण संस्थानों में स्नातक एवं परास्नातक कक्षा में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्र/छात्राऐं हैं।

निर्दशन

शोधकर्ता अपने अध्ययन के लिए सरकारी कॉलेजों का चुनाव किया है। शोधकार्ता ने **उद्देश्य पूर्ण** निदर्शन विधि एवं स्नोबॉल विधि का प्रयोग करते हुए 300 उत्तरदाताओं का चयन किया।

तथ्य संकलन

शोधकर्ता ने साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया है।

तथ्य विश्लेषण

रेखा चित्र 1

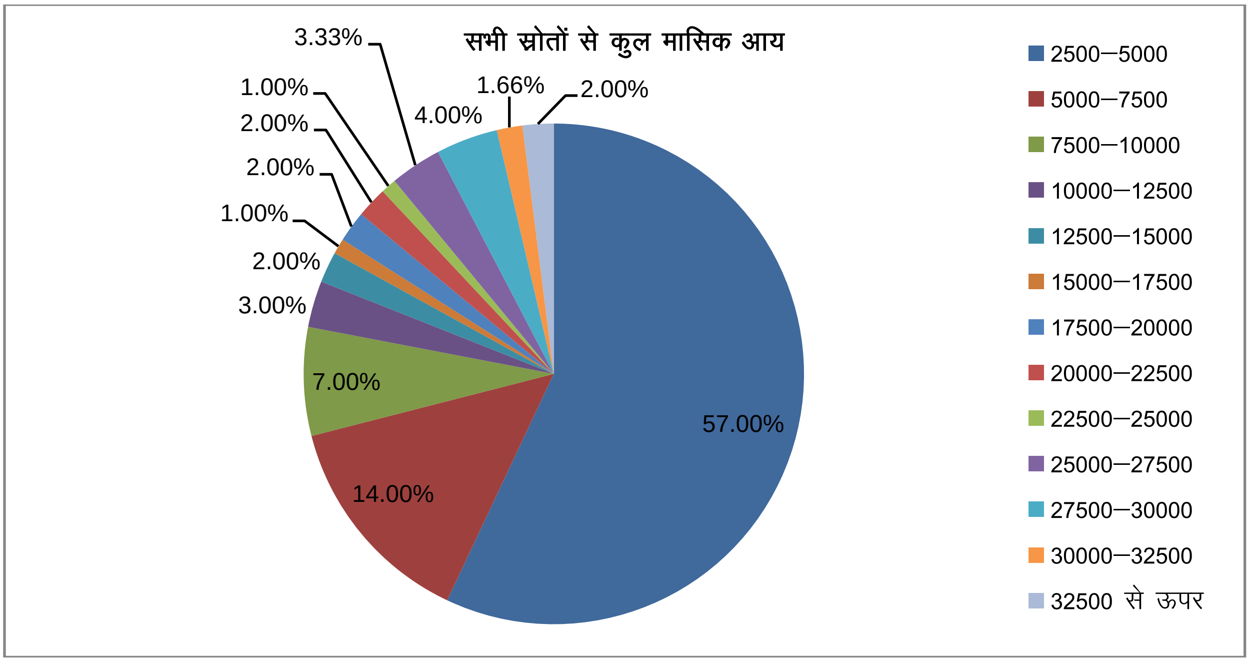

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-1, August-2018

E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

रेखा चित्र 1 में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के परिवारों का सभी स्रोतों से कुल मासिक आय की जानकारी प्राप्त की गयी है। जिसमें से अधिकांश उत्तरदाताओं के परिवारों का मासिक आय रूपया 2500 से 5000 के बीच है जो 171 (57%) है। रूपया 5000 से 7500 तक 42(14%) उत्तरदाताओं के परिवारो की मासिक आय है। रूपया 7500 से 10000 तक 21(7%) उत्तरदाताओं के पिता की मासिक आय है। रूपया 10000 से 12500 तक 9 (3%) उत्तरदाताओं की मासिक आय है। रूपया 12500 से 15000 तक 6 (2%) उत्तरदाताओं की मासिक है। रूपया 15000 से 17500 तक 3(1%) मासिक है। रूपया 17500 से 20000 तक 6 (2%) मासिक है। रूपया 20000 से 22500 तक 6(2%) है। रूपया 22500–25000 तक 3(1%) है। रूपया 25000 से 27500 तक उत्तरदाताओं के पिता के मासिक आय 10(3.3%) है। रूपया 27500 से 30000 तक उत्तरदाताओं के पिता की मासिक आय 12(4%) है। रूपया 30000 से 32500 तक उत्तरदाताओं के पिता का मासिक है 5 (1.6%) है। रूपया 32500 से ऊपर 6(2%) उत्तरदाताओं के पिता का मासिक आय है।

उपरोक्त रेखा चित्र के अनुसार अधिकांश उत्तरदाताओं के परिवारों की मासिक आय रूपया 2500 से 5000 के बीच है जो 57% है। ये निम्न आय वाले परिवार है जो गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे है। जिसमे से अधिकतर मजदूर एवं कृषि कार्य करने वाले परिवार है। आज भी अनुसूचित जातियों के परिवारों में गरीबी है।

सुधा पाई (2000) ने अपने अध्ययन में पाया कि अनुसूचित जाति आर्थिक रूप से गरीब और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों का गठन करते हैं। साक्षरता के निम्न स्तर के साथ छोटी भूमि की मालिकाना, वे तेजी से औद्योगिक विकास की कमी के कारण शहरीकरण, रोजगार और मजदूरी के निम्न स्तर से पीड़ित हैं।

आर.एस. देशपांडे (2004) ने अपने अध्ययन में पाया कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजातियों में गरीबों की घनत्व सबसे अधिक है यह निश्चित रूप से आकस्मिक नहीं है लेकिन एक मजबूत ऐतिहासिक उत्पत्ति है उनके अध्ययन से यह भी संकेत मिलता है कि अनुसूचित जाति की जनसंख्या का 52.17 प्रतिशत गरीबी रेखा से नीचे है।

रेखा चित्र 2

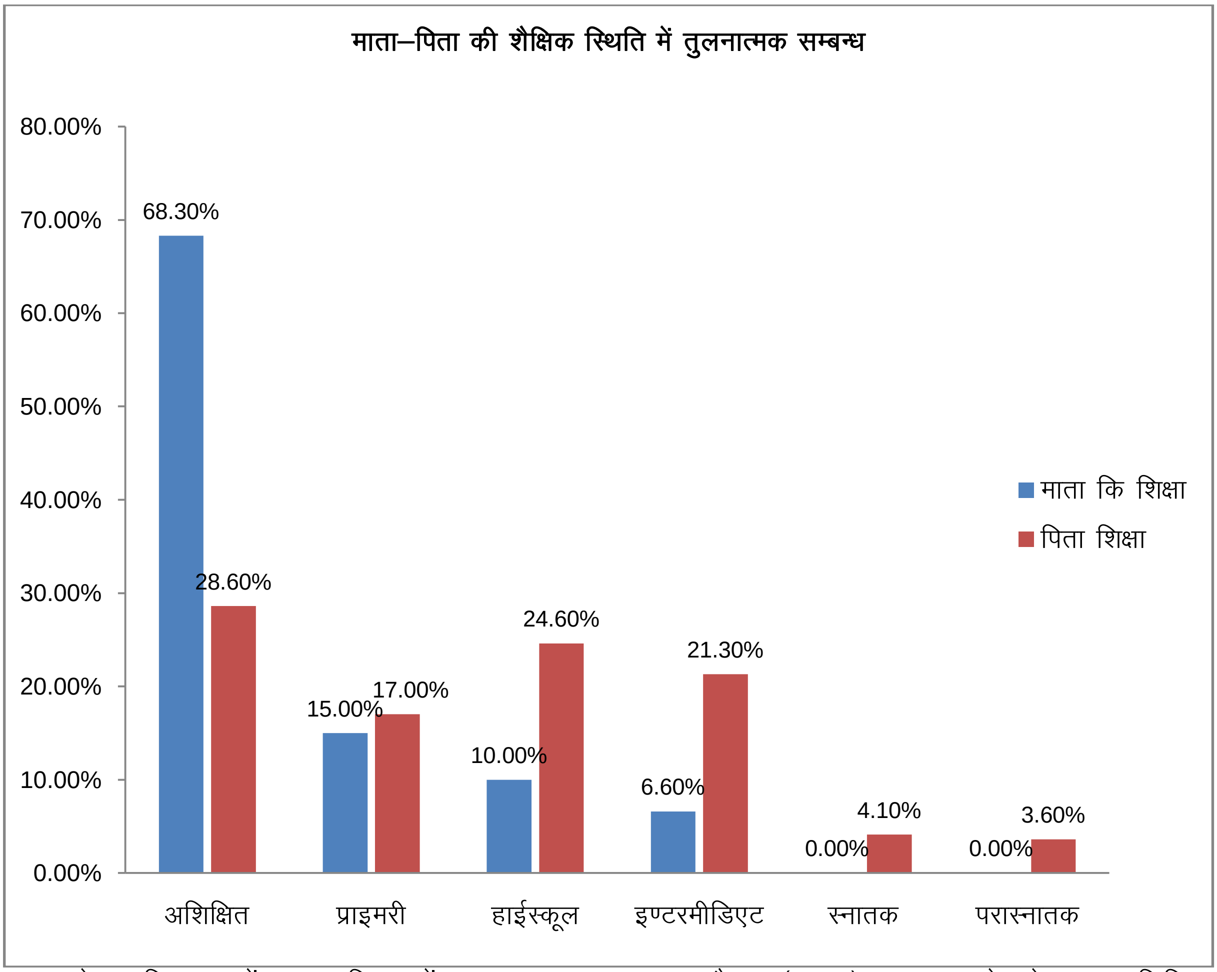

रेखा चित्र 2 में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के माता पिता के शैक्षिक स्थिति का तुलनात्मक सम्बन्धों का विश्लेषण किया गया है 205(68.3%) उत्तरदाताओ को माता अशिक्षित है जबकि 86(28.6%) उत्तरदाताओ के पिता अशिशित है। पिता की तुलना मे उत्तरदाताओं की 39.7% माता अधिक

अशिक्षित है। 45(15%) उत्तरदाताओं की माता प्राथमिक तक शिक्षित हैं। जबकि पिता 51(17%) प्राथमिक तक शिक्षित है। पिता की तुलना मे माता की प्राथमिक शिक्षा 2% कम है। 30(10%) उत्तरदाताओ की माता की शिक्षा हाईस्कूल तक शिक्षित है जबकि उत्तरदाताओं के पिता 74(24.6%) हाईस्कूल तक शिक्षित है। पिता की तुलना में माता की शिक्षा हाईस्कूल में भी 14.6% कम है। 20(6.6%) उत्तरदाताओ की माता इण्टरमीडिएट तक शिक्षित हैं। जबकि उत्तरदाताओं के पिता 64(21.3%) इण्टरमीडिएट तक शिक्षित हैं। पिता की तुलना मे माता की शिक्षा 14.7% कम है। स्नातक कक्षा तक कोई भी उत्तरदाताओ की माता शिक्षित नहीं है जबकि 14(4.6%) उत्तरदाताओ के पिता स्नातक तक शिक्षित हैं। परास्नातक कक्षा तक कोई भी उत्तरदाताओं की माता शिक्षित नहीं है जबकि 11 (3.6%) उत्तरदाताओ के पिता परास्नातक कक्षा तक शिक्षित है। अतः शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर महिलाओं की स्थिति कमजोर है।

रेखा चित्र 3

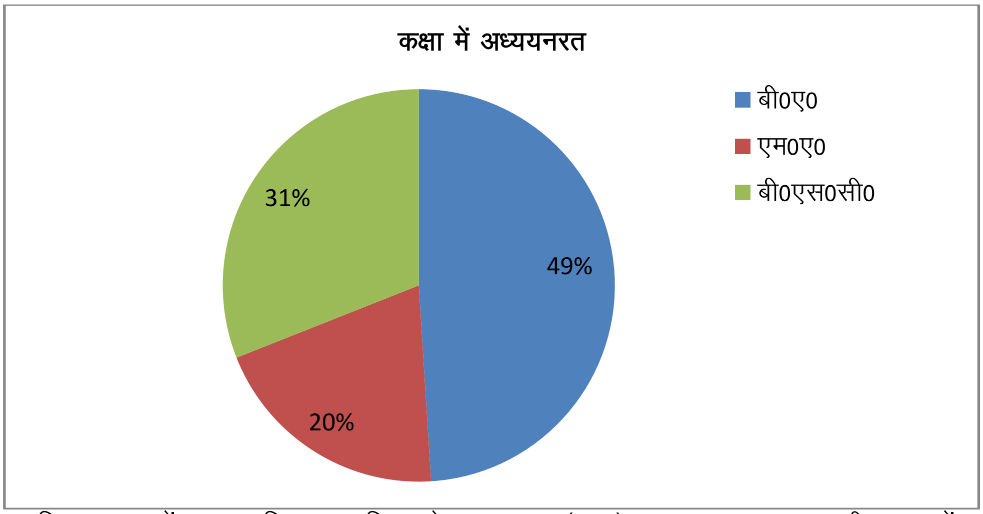

रेखा चित्र 3 में अनुसूचित जाति के छात्र–छात्रायें वर्तमान में कौन सी कक्षा में अध्ययनरत हैं इसकी जानकारी प्राप्त की गई है। अधिकांश 147(49%) उत्तरदाता बी0ए0 की कक्षा में अध्ययनरत हैं तथा 60(20%) उत्तरदाता एम0ए0 की कक्षा में अध्ययनरत हैं। 93(31%) उत्तरदाता बी0एस0सी0 की कक्षा में अध्ययनरत है।

रेखा चित्र 4

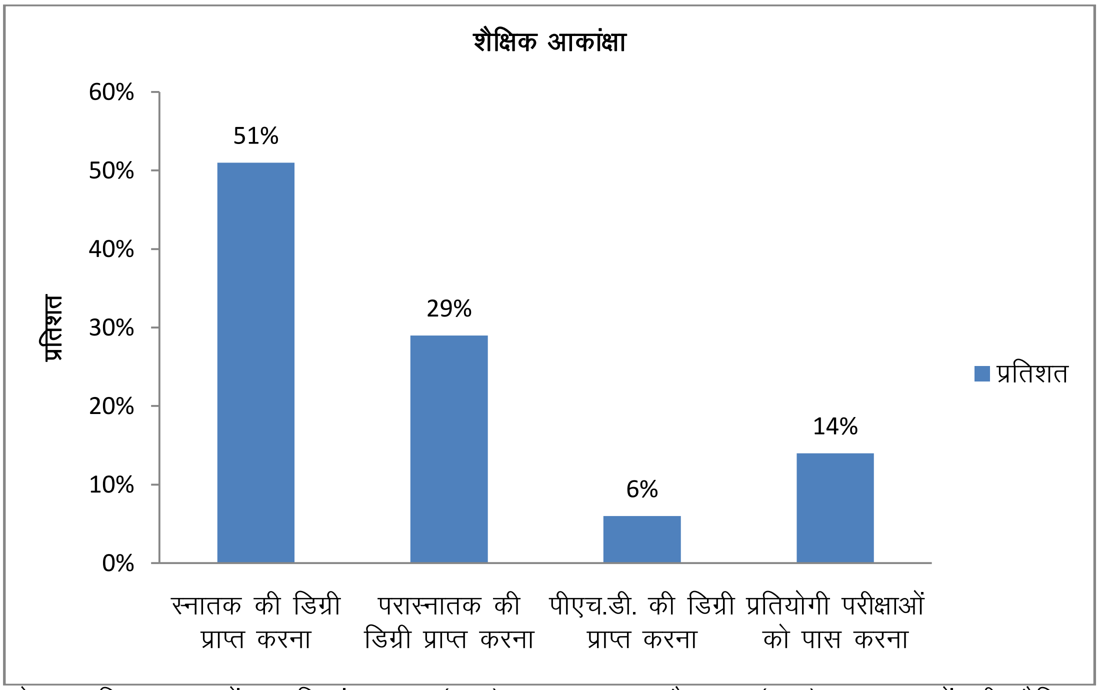

रेखा चित्र 4 में अधिकांश 153(51%) उत्तरदाताओं की शैक्षिक आकांक्षा स्नातक की डिग्री प्राप्त करना है। 87 (29%) उत्तरदाताओं की शैक्षिक आकांक्षा परास्नातक की डिग्री प्राप्त करना है। केवल 18 (6%)

उत्तरदाताओं की शैक्षिक आकांक्षा पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करना है एवं 42 (14%) उत्तरदाताओं की शैक्षिक आकांक्षा प्रतियोगी परीक्षाओं को पास करना है।

रेखा चित्र 5

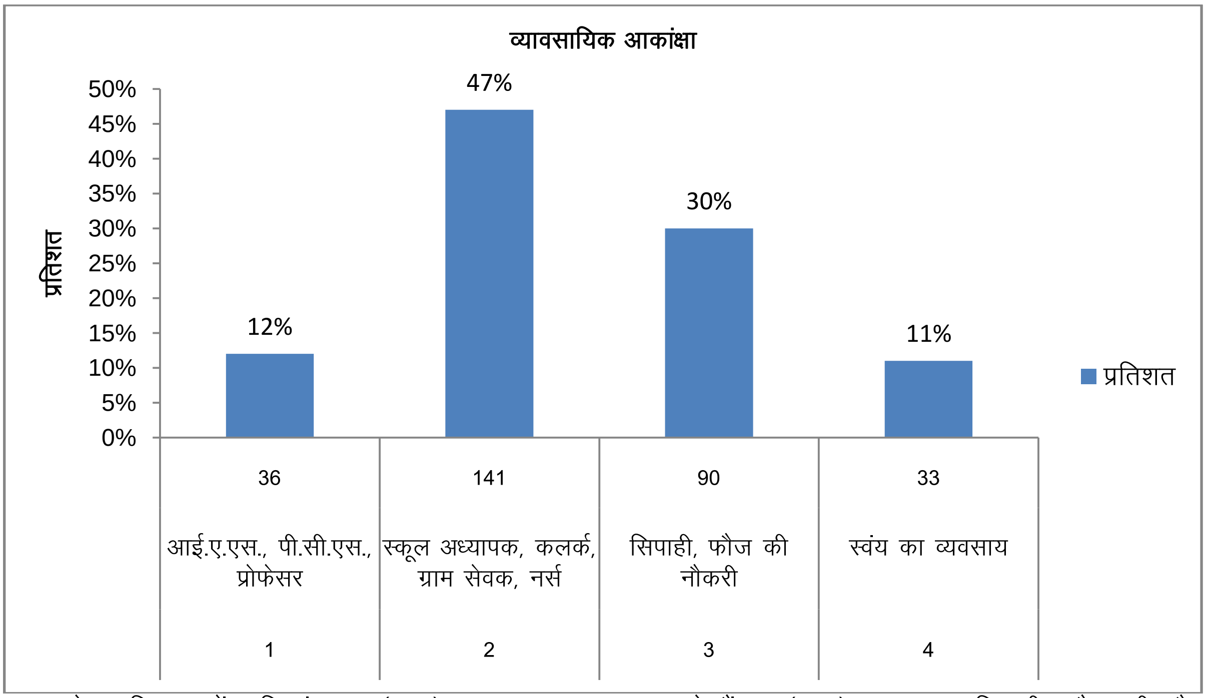

रेखा चित्र 5 में अधिकांश 141(47%) उत्तरदाता स्कूल अध्यापक, कर्लक, ग्राम सेवक, नर्स की नौकरी प्राप्त करना चाहते हैं तथा 36(12%) उत्तरदाता आई.ए.एस., पी. सी.एस., विश्वविद्यालय शिक्षक की नौकरी प्राप्त करना चाहते हैं। 90(30%) उत्तरदाता सिपाही, फौज की नौकरी प्राप्त करना चाहते हैं। केवल 33(11%) उत्तरदाता स्वंय का व्यवसाय अपनाना चाहते हैं।

रेखा चित्र 6

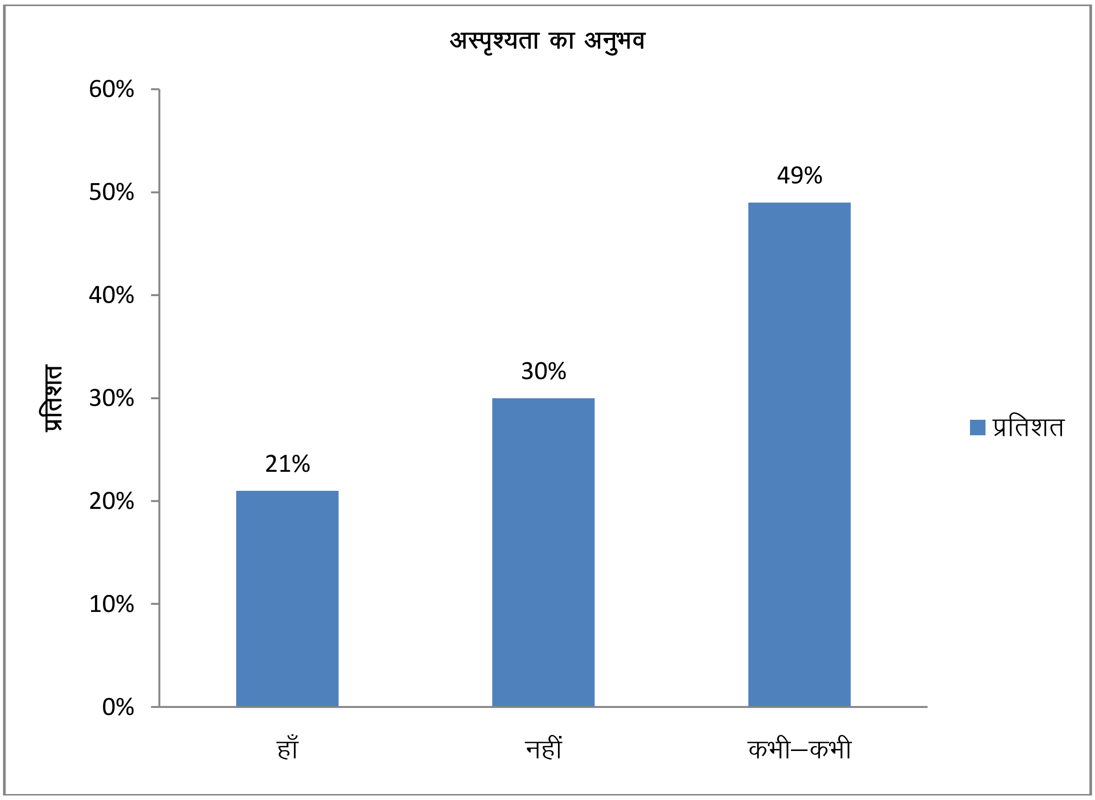

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-1, August-2018
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

रेखा चित्र 6 के अनुसार अधिकांश (49%+21%=70%) उत्तरदाताओं ने अस्पृश्यता का अनुभव करते हैं। इससे सिद्ध होता है कि हमारे समाज में अस्पृश्यता अभी मौजूद है जबकि इसे समाप्त करने के लिये हमारे संविधान के अनुच्छेद–17 में अस्पृश्यता निवारण अधिनियम 1955 में बनाया गया है। अतः अधिकांश उत्तरदाता 70% आज के स्वतन्त्र और दुनिया के सबसे बड़े प्रजातन्त्र में अस्पृश्यता का अनुभव कर रहे हैं। जबकि 1955 में ही अस्पृश्यता के निवारण के लिए अधिनियम बन चुका था। सम्भवतः समाज की सोच साक्षरता, जागरूकता बढ़ने के बाद भी उतनी परिवर्तित नहीं हुई है जितनी होनी चाहिए। व्यवहारिक स्तर पर अस्पृश्यता विद्यमान है विशेष रूप से ग्रामीण भारत में।

बी.बी. शाह (1968) ने गुजरात में शिक्षा और अस्पृश्यता के बीच सम्बन्ध को इंगित किया है।

सारणी नं0 1

सभी स्रोत्रों से कुल मासिक आय एवं शैक्षिक आकांक्षाओं में सहसम्बन्ध

क्र0सं0	सभी स्रोत्रों से कुल मासिक आय	शैक्षिक आंकाक्षायें				योग
		स्नातक	परास्नातक	पीएच.डी.	प्रतियोगी परीक्षा	
1	2500–12500	153	87	-	3	243 (81%)
2	12500–22500	-	-	1	20	21 (7%)
3	22500–32500	-	-	17	19	36 (12%)
	योग	153 (51%)	87 (29%)	18 (6%)	42 (14%)	300 (100%)

आर्थिक स्थिति उत्तरदाताओं के शैक्षिक आकांक्षा को प्रभावित कर रही है। जिन उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति निम्न है इनकी शैक्षिक आकांक्षा भी निम्न हैं। जिन उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति उच्च है इनकी शैक्षिक आकांक्षा भी उच्च है। एक विशेष बात उभर कर आई है कि आर्थिक स्थिति थोड़ी सी बेहतर होने पर प्रतियोगी परीक्षाओं की ओर रूझान बढ़ रहा है। आर्थिक स्थिति उत्तरदाताओं के शैक्षिक आकांक्षाओं से प्रभावित कर रही है।

परिकल्पनात्मक परीक्षण

सारणी नं0 1 में शून्य परिकल्पना यह मानी गयी है कि परिवार की कुल मासिक आय एवं उत्तरदाताओं की शैक्षिक आकांक्षाओं के बीच कोई सम्बन्ध नहीं है।

परीक्षण परिणाम x^2 (chi-square)

df	6
सार्थकता स्तर	0.05
x^2 (chi-square)	411.39
तालिका मूल्य (Table Value)	12.6

परीक्षण परिणाम

सारणी सं0 1 से प्राप्त x^2 का मूल्य तालिका मूल्य (Table Value) से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

परिणाम

अतः यहाँ सिद्ध होता है उत्तरदाताओं की पारिवारिक मासिक आय में वृद्धि होने पर उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं में भी वृद्धि होती है।

व्याख्या

प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट है कि आर्थिक स्थिति उत्तरदाताओं की शैक्षिक आकांक्षाओं को बहुत ही गहराई से प्रभावित कर रही है। अतः जैसे–जैसे उत्तरदाताओं की पारिवारिक आय में वृद्धि होगी वैसे–वैसे शैक्षिक आकांक्षाओं में ऊँची वृद्धि होगी।

सारणी नं0 2

सभी स्रोत्रों से कुल मासिक आय एवं उत्तरदाताओं की व्यावसायिक आकाक्षायें

क्र0सं0	सभी स्रोत्रों से कुल मासिक आय	व्यावसायिक आंकाक्षायें				योग
		1	2	3	4	
1	2500–15000	-	141	-	25	243 (57%)
2	15000–22500	-	-	13	8	21 (14%)
3	22500–32500	36	-	-	-	36 (7%)
	योग	36 (12%)	141 (47%)	90 (30%)	33 (11%)	300 (100%)

नोट–
1. आई0ए0एस0, पी0सी0एस0, विश्वविद्यालय शिक्षक
2. स्कूल अध्यापक, ग्राम सेवक, नर्स
3. सिपाही, फौज की नौकरी
4. स्वंय का व्यवसाय

उपरोक्त सारणी के गहन विश्लेषण के उपरांत हम कह सकते हैं कि जिन उत्तरदाताओं के मासिक आय कम हैं ऐसे उत्तरदाता केवल स्कूल अध्यापक ग्राम सेवक, नर्स, सिपाही, फौज की नौकरी एवं स्वयं का व्यवसाय अपनाने की व्यावसायिक आकांक्षा रखते है लेकिन जिन उत्तरदाताओं की मासिक आय अधिक है। ऐसे उत्तरदाता

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-1, August-2018

E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

आई0ए0एस0, पी0सी0एस0 एवं विश्वविद्यालय शिक्षक की नौकरी प्राप्त करने की व्यावसायिक आकांक्षा रखते हैं।

अतः आर्थिक स्थिति उत्तरदाताओ की व्यावसायिक आकांक्षा को प्रभावित कर रही है। जिन उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति निम्न है इनकी व्यावसायिक आकांक्षा भी निम्न हैं। जिन उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति उच्च है इनकी व्यावसायिक आकांक्षा भी उच्च हैं। आर्थिक स्थिति उत्तरदाताओं के व्यावसायिक आकांक्षा को प्रभावित कर रही है।

परिकल्पनात्मक परीक्षण

सारणी नं0 2 में शून्य परिकल्पना यह मानी गयी है कि उत्तरदाताओं की उच्च व्यवसायिक आकांक्षा एवं उनके परिवार की कुल मासिक आय में वृद्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

परीक्षण परिणाम x^2 (chi-square)

df	6
सार्थकता स्तर	0.05
x^2 (chi-square)	362.43
तालिका मूल्य (Table Value)	12.6

परीक्षण परिणाम

सारणी नं0 2 से प्राप्त x^2 का मूल्य तालिका मूल्य (Table Value) से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

परिणाम

अतः यहाँ सिद्ध होता है कि उत्तरदाताओं के पारिवारिक कुल मासिक आय में जैसे–2 वृद्धि होती है उत्तरदाताओं के शैक्षिक आकांक्षा में भी वृद्धि होती है।

व्याख्यात्मक परिणाम

प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि पारिवारिक आय में वृद्धि होने से उत्तरदाताओं की व्यावसायिक आकांक्षा भी निरन्तर उच्च होती जा रही है।

सारणी नं0 3

पिता की शिक्षा एंव उत्तरदाताओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में सहसम्बन्ध

क्र0 सं0	पिता की शिक्षा	1	2	3	4	योग
1	अशिक्षित	-	56	20	10	86 (28.6%)
2	प्राईमरी	-	20	20	11	51 (17%)
3	हाईस्कूल	-	40	27	07	74 (24.6%)
4	इण्टरमीडिएट	11	25	23	05	64 (21.3%)
5	स्नातक	14	-	-	-	14 (4.6%)
6	परास्नातक	11	-	-	-	11 (3.6%)
7	अन्य	-	-	-	-	-
	योग	36 (12%)	141 (47%)	90 (30%)	33 (11%)	300 (100%)

नोट– 1. आई0ए0एस0, पी0सी0एस0, विश्वविद्यालय शिक्षक

2. स्कूल अध्यापक, ग्राम सेवक, नर्स

3. सिपाही, फौज की नौकरी

4. स्वंय का व्यवसाय

हम कह सकते है कि जिन उत्तरदाताओं के पिता की शैक्षिक स्थिति निम्न है उन उत्तरदाताओं की व्यावसायिक आकांक्षा भी निम्न है। जिन उत्तरदाताओं के पिता की शैक्षिक स्थिति उच्च है उन उत्तरदाताओं की व्यावसायिक आकांक्षा भी उच्च है।

परिकल्पनात्मक परीक्षण

सारणी नं0 3 में शून्य परिकल्पना यह मानी गई है कि उत्तरदाताओं के पिता की शिक्षा एवं उनकी व्यवसायिक आकांक्षा में कोई सम्बन्ध नहीं है।

परीक्षण परिणाम x^2 (chi-square)

df	15
सार्थकता स्तर	0.05
x^2 (chi-square)	336.52
तालिका मूल्य (Table Value)	25

परीक्षण परिणाम

सारणी नं0 3 से प्राप्त x^2 का मूल्य, तालिका मूल्य (Table Value) से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

परिणाम

अतः यहाँ पर यह स्पष्ट होता है कि पिता की शिक्षा एवं उत्तरदाता की व्यावसायिक आकांक्षा में सम्बन्ध है।

व्याख्यात्मक स्पष्टीकरण

अतः प्राप्त परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं की उच्च व्यावसायिक आकांक्षा पर पिता के उच्च शिक्षा का प्रभाव पड़ता है अर्थात पिता की शिक्षा जितनी ऊँची होगी उत्तरदाताओं की व्यावसायिक आकांक्षा भी उसी प्रकार की ऊँची होगी।

निष्कर्ष

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि तथा शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

अधिकांश उत्तरदाताओं के परिवारों की मासिक आय रूपया 2500 से 5000 के बीच है जो 57% है। ये निम्न आय वाले परिवार है जो गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे है। जिसमे से अधिकतर मजदूर एवं कृषि

कार्य करने वाले परिवार है। आज भी अनुसूचित जातियों के परिवारों में गरीबी है।

205(68.3%) उत्तरदाताओ को माता अशिक्षित है जबकि 86(28.6%) उत्तरदाताओ के पिता अशिक्षित है। पिता की तुलना मे उत्तरदाताओं की 39.7% माता अधिक अशिक्षित है। 45(15%) उत्तरदाताओं की माता प्राथमिक तक शिक्षित हैं। जबकि पिता 51(17%) प्राथमिक तक शिक्षित है। पिता की तुलना मे माता की प्राथमिक शिक्षा 2% कम है। 30(10%) उत्तरदाताओ की माता की शिक्षा हाईस्कूल तक शिक्षित है जबकि उत्तरदाताओं के पिता 74(24.6%) हाईस्कूल तक शिक्षित है। पिता की तुलना में माता की शिक्षा हाईस्कूल में भी 14.6% कम है। 20(6.6%) उत्तरदाताओ की माता इण्टरमीडिएट तक शिक्षित हैं। जबकि उत्तरदाताओं के पिता 64(21.3%) इण्टरमीडिएट तक शिक्षित हैं। पिता की तुलना मे माता की शिक्षा 14.7% कम है। स्नातक कक्षा तक कोई भी उत्तरदाताओ की माता शिक्षित नहीं है जबकि 14(4.6%) उत्तरदाताओ के पिता स्नातक तक शिक्षित हैं। परास्नातक कक्षा तक कोई भी उत्तरदाताओ की माता शिक्षित नहीं हैं जबकि 11(3.6%) उत्तरदाताओ के पिता परास्नातक कक्षा तक शिक्षित है। अतः शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर महिलाओं की स्थिति कमजोर है।

अधिकांश 147(49%) उत्तरदाता बी0ए0 की कक्षा में अध्ययनरत हैं तथा 60(20%) उत्तरदाता एम0ए0 की कक्षा में अध्ययनरत हैं। 93(31%) उत्तरदाता बी0एस0सी0 की कक्षा में अध्ययनरत है।

अधिकांश 153(51%) उत्तरदाताओं की शैक्षिक आकांक्षा स्नातक की डिग्री प्राप्त करना है। 87(29%) उत्तरदाताओं की शैक्षिक आकांक्षा परास्नातक की डिग्री प्राप्त करना है। केवल 18(6%) उत्तरदाताओं की शैक्षिक आकांक्षा पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करना है एवं 42(14%) उत्तरदाताओं की शैक्षिक आकांक्षा प्रतियोगी परीक्षाओं को पास करना है।

अधिकांश 141(47%) उत्तरदाता स्कूल अध्यापक, कर्लक, ग्राम सेवक, नर्स की नौकरी प्राप्त करना चाहते हैं तथा 36(12%) उत्तरदाता आई.ए.एस., पी.सी.एस., विश्वविद्यालय शिक्षक की नौकरी प्राप्त करना चाहते हैं। 90(30%) उत्तरदाता सिपाही, फौज की नौकरी प्राप्त करना चाहते हैं। केवल 33(11%) उत्तरदाता स्वंय का व्यवसाय अपनाना चाहते हैं।

अधिकांश 70% उत्तरदाताओं ने अस्पृश्यता का अनुभव करते हैं। इससे सिद्ध होता है कि हमारे समाज में अस्पृश्यता अभी मौजूद है जबकि इसे समाप्त करने के लिये हमारे संविधान के अनुच्छेद–17 में अस्पृश्यता निवारण अधिनियम 1955 में बनाया गया है। अतः अधिकांश उत्तरदाता 70% आज के स्वतन्त्र और दुनिया के सबसे बड़े प्रजातन्त्र में अस्पृश्यता का अनुभव कर रहे हैं। जबकि 1955 में ही अस्पृश्यता के निवारण के लिए अधिनियम बन चुका था। सम्भवतः समाज की सोच साक्षरता, जागरूकता बढ़ने के बाद भी उतनी परिवर्तित नहीं हुई है जितनी होनी चाहिए। व्यवहारिक स्तर पर अस्पृश्यता विद्यमान है विशेष रूप से ग्रामीण भारत में।

आर्थिक स्थिति उत्तरदाताओं के शैक्षिक आकांक्षा को प्रभावित कर रही है। जिन उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति निम्न है इनकी शैक्षिक आकांक्षा भी निम्न हैं। जिन उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति उच्च है इनकी शैक्षिक आकांक्षा भी उच्च है।

आर्थिक स्थिति उत्तरदाताओ की व्यावसायिक आकांक्षा को प्रभावित कर रही है। जिन उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति निम्न है इनकी व्यावसायिक आकांक्षा भी निम्न हैं। जिन उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति उच्च है इनकी व्यावसायिक आकांक्षा भी उच्च हैं। आर्थिक स्थिति उत्तरदाताओं के व्यावसायिक आकांक्षा को प्रभावित कर रही है।

हम कह सकते है कि जिन उत्तरदाताओं के पिता की शैक्षिक स्थिति निम्न है उन उत्तरदाताओं की व्यावसायिक आकांक्षा भी निम्न है। जिन उत्तरदाताओं के पिता की शैक्षिक स्थिति उच्च है उन उत्तरदाताओं की व्यावसायिक आकांक्षा भी उच्च है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आहूजा, राम, (2012), भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।

अरूण कुमार, (संपादक), (2015), आधुनिक शिक्षा एवं दलित, रावत पब्लिकेशन जयपुर।

लक्ष्मी *वर्मा, पद्मा अग्रवाल एवं सुमन लता सक्सेना (2016)– "उच्च एवं निम्न व्यावसायिक आकांक्षा का किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन" जरनल ऑफ रविशंर यूनिवर्सिटी, पार्ट ए, 22, 121-124, 2016, ISSN-0970-5910*

सच्चिदानंद (1977), द हरिजन इलीट, थाम्सन प्रेस लि0 फरीदाबाद।

कुमार, रंतीत, (2017), शोध कार्य प्रणाली–आरंभिक शोधकताओं के लिए चरणबद्ध गाइड 4म सेज प्रकाशन प्रा0 लि0 भारत, नई दिल्ली।

Chakrabarty, G (1999), "SCs and STs in Rural Andhra Pradesh: Their Education, Health Status and Income", Journal of Rural Development, Vol.18, No.2, April-June, pp.185-219.

Deshpande, R.S., Neelambar Hatti and Amalendu Jyotishi (2004), "Poverty in India: An Institutional Explanation", Paper presented at the 18th European Conference on Modern South Asian Studies (SASNET), Lund, Sweden, 6-9 July.

Narayan Mishra (2001), 'Scheduled Castes Education – Issues and Prospects', Kalpaz Publications, Delhi.

Prakash N. Pimpley (1980), A profile of Scheduled Castes Students – A Case Study of Punjab.

Shah, B.V. (1968), Social Change and College Student of Gujarat, M.S. University Baroda.

Sudha Pai (2000), "Changing Socio-economic and Political Profile of Scheduled Castes in Uttar Pradesh", Journal of Indian School of Political Economy, Vol.12, No.3 & 4, July- December, pp.405-422.

Suresha R., Mylarappa B.C., (2012), Socio-economic status of rural scheduled caste female students in higher education. Indian J. Edu. Inf. Manage., vol. 1, No. 8 (August 2012).

Victor S. D'Souza (1980), Educational Inequalities among Scheduled Castes- A case study of Punjab.